21-01-2020

जल स्त्रोतों का दोहन न करें

प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीडी लॉन्च करते बाएं से डी स्वेन, निदेशक नरेंद्र मोहन, उच्च शिक्षा राज्यमंत्री नीलिमा कटियार व सीमा परोहा।

एनएसआई में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अफसरों का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

कानपुर। चीनी मिलों से निकलने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए केंद्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार से नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में शुरू हुआ। इसमें जीरो लिक्विड डिस्चार्ज और मिलों से निकलने वाले गंदे पानी को रीसाइकिल करके इस्तेमाल योग्य बनाने के संबंध में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी राज्यमंत्री नीलिमा कटियार ने किया। उन्होंने कहा प्राकृतिक स्त्रोतों से पानी के दोहन को रोकें तथा नदियों व अन्य जल स्त्रोतों को प्रदूषित होने से बचाएं। प्रशिक्षण में यूपी, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि प्रांतों के अधिकारी शामिल हैं। इस मौके पर एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन, डॉ. सीमा परोहा, डॉ. महेंद्र कुमार यादव ने विचार व्यक्त किए। प्रोफेसर डी. स्वेन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ब्यूरो

चीनी मिल के प्रदूषित जल से बनेगी पोटाश

कानपुर। चीनी मिलों की डिस्टलरी से निकलने वाले गंदे पानी को अगर सुखाया जाए तो इसकी राख में पोटाश मिलती है। इस पोटाश का इस्तेमाल खाद बनाने में किया जाता है। अभी देश में पोटाश कम मात्रा में पैदा होती है। विदेश से आयात करना पड़ता है। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी मिलें अपनी डिस्टलरी में पोटाश बनाकर आय दोगुना कर सकती हैं। इस संबंध में तकनीक तैयार की गई है। जीव रसायन की विज्ञानी डॉ. सीमा परोहा ने बताया कि पोटाश से अच्छी श्रेणी का फर्टिलाइजर तैयार किया जा सकता है। डिस्टलरियों से पोटाश मिलेगी तो फर्टिलाइजर सस्ती होगी।

चीनी मिलों को बनाएं प्रदूषण मुक्त : नीलिमा

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

चीनी मिलों को प्रदूषण मुक्त बनाएं। डिस्टलरियों में ताजे पानी की खपत को कम करें और निकलने वाले दूषित पानी की मात्रा को कम करने के साथ उसका रीसाइकिल कर प्रयोग करें। यह बात प्रदेश की उच्च शिक्षा राज्यमंत्री नीलिमा कटियार ने कही। कहा, चीनी उद्योग नहीं बल्कि हर उद्योग से कचरे जैसे शब्द को भी खत्म करने की जरूरत है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सोमवार को पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एवं चीनी मिलों में ह्यप्रदूषण नियंत्रण हेतु स्वच्छ तकनीक ह्य रहा। इसका शुभारंभ मुख्य अतिथि नीलिमा कटियार और संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने किया। नीलिमा कटियार ने कहा कि प्रदेश व केंद्र सरकार भी पानी और नदियों को प्रदूषित करने के लिए अनेक योजनाएं चला रही है। इसमें हर एक नागरिक को अपना समर्थन देने की जरूरत है। प्रो. नरेंद्र मोहन ने एफ्लुएंट ट्रीटमेंट के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डॉ. सीमा परोहा ने डिस्टलरी में जीरो लिक्विड डिसचार्ज प्राप्त करने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। डॉ. आशुतोष बाजपेई ने चीनी के निर्माण, महेंद्र कुमार यादव ने ताजे पानी की खपत कम करने के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के अलावा पश्चिम बंगाल, असम, गुजरात, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश व दिल्ली के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित कार्यशाला में मंत्री नीलिमा कटियार व अन्य।

प्रत्येक नागरिक समझे पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी : नीलिमा कटियार

कानपुर (एसएनबी)। प्रदूषण नियंत्रण हेतु स्वच्छ तकनीक' विषय पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला सोमवार को आरंभ हुई। उप्र सहित विभिन्न राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण व चीनी मिलें अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए आयोजित उक्त कार्यशाला का शुभारंभ प्रदेश की उच्च शिक्षा तथा विज्ञान एवं तकनीक राज्यमंत्री नीलिमा कटियार ने बतौर मुख्य अतिथि किया।

शर्करा संस्थान में 'प्रदूषण नियंत्रण के लिए स्वच्छ 'तकनीक' विषयक प्रशिक्षण कार्यशाला

राज्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि सरकार नगरीय व औद्योगिक प्रदूषण को रोकने हेतु कटिबद्ध है, लेकिन प्रत्येक नागरिक का भी यह कर्तव्य है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वे अपनी जिम्मेदारी महसूस करें। प्राकृतिक स्त्रोतों से पानी का दोहन रोकें तथा नदियों व अन्य जल स्त्रोतों को प्रदूषित होने से बचायें। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इससे तकनीकी विकास को संबद्ध पक्षों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। संस्थान निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने चीनी मिलों व डिस्टलरियों में ताजे पानी के खपत एवं उत्प्रभाव शोधन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि देश में विभिन्न प्रकार की चीनी का उत्पादन अलग-अलग तकनीकों के माध्यम से किया जाता है एवं उनसे पैदा होने वाले प्रदूषित जल (उत्प्रवाह) की गुणवत्ता भी अलग-अलग होती है। अतः यह आवश्यक है कि चीनी मिले मांग के अनुसार इफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट लगायें।

आचार्य जीव रसायन डॉ. सीमा परोहा ने इंसीलेशन बायल एवं बायो कंपोस्ट उत्पादन द्वारा शीरे पर आधारित डिस्टलरियों में 'जीरो लिक्विड डिस्चार्ज' प्राप्त करने की प्रक्रिया का वर्णन किया। इंसीनेशन ब्यालर से प्राप्त होने वाली राख से पोटाश संपन्न खाद बनाने पर ध्यान दिया जाये। संस्थान के आचार्य शर्करा प्रौद्योगिकी डॉ.आशुतोष बाजपेई व तकनीकी अधिकारी (शर्करा प्रौद्योगिकी) ने भी विभिन्न विषयों पर अधिकारियों का ज्ञानवर्द्धन किया। कार्यक्रम का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. डी स्वेन ने किया।

एनएसआई मे प्रशिक्षण कार्यशाला में मुख्य अतिथि नीलिमा कटियार।

प्रदूषण रोकने की जिम्मेदारी हर नागरिक समझें

प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए विभिन्न राज्यों से आये प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधि

सीडी दिखाते राज्य मंत्री नीलिमा कटियार, निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन।

कानपुर, 20 जनवरी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के सभागार में आयोजित प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एवं चीनी मिलों के प्रतिनिधियों के लिए प्रदूषण नियंत्रण हेतु स्वच्छ तकनीक विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करतीं हुई उच्च शिक्षा विज्ञान-तकनीकी राज्यमंत्री नीलिमा कटियार ने कहाकि राज्य और केंद्र सरकार म्यूनिसिपल एवं औद्योगिक प्रदूषण रोकने के लिए कटिबद्ध है एवं प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी को समझे और प्राकृतिक स्रोतो से पानी के होने रोके और नदियों एवं अन्य जल स्रोतो को प्रदूषित होने से बचायें। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने चीनी मिलों एवं डिस्टलरियों में ताजे पानी की खपत एवं उत्प्रवाह शोधन (एफ्लुएंट ट्रीटमेंट) पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहाकि देश में विभिन्न प्रकार की चीनी जैसे रा शुगर, प्लेनटेशन, वाइट शुगर एवं रिफाइंड शुगर का उत्पादन अलग-अलग तकनीकों के माध्यम से किया जाता है। प्रत्येक दशा में पैदा होने वाले प्रदूषण जल (उतप्रवाह) की गुणवत्ता अलग-अलग होती है। चीनी मिले मांग के अनुसार इफ्लुएंड ट्रीटमेंट प्लांट लगवाना चाहिये। उन्होंने सल्फेट रिमूवर एवं ब्राइन रिकवरी की विभिन्न तकनीकों को विस्तार प्रकाश डाला। डा. सीमा परोहा ने इन्सीलेशन बायल एवं बायो कम्पोस्ट उत्पादन द्वारा शीरे पर आधारित डिस्टलरियों में जीरो लिक्वड डिस्चार्ज प्राप्त करने की प्रक्रिया को विस्तार जानकारियां दी। इस दौरान डा. आशुतोष वाजपेयी, तकनीकी अधिकारी महेंद्र कुमार यादव आदि ने अपने व्याख्यान दिये। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से पश्चिम बंगाल, असम, गुजरात, उडीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश एवं दिल्ली के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधि भाग ले रहे है। कार्यक्रम का संचालन प्रो. डी. स्वेन ने किया।